नए विश्वासी के लिए सरल सत्य

(प्रश्न एवं उत्तर)

दूसरा प्रकाशन
संस्करण 2.0

स्पष्ट और सरल मीडिया समूह
www.clearandsimplemedia.org

प्रस्तावना

कई सालों से, परमेश्वर के लोगों ने प्रश्नोत्तर के एक संग्रह का इस्तेमाल किया है जो नए विश्वासियों को सबसे महत्वपूर्ण सत्यों को सिखाने में मदद करता है। यह पुस्तक यीशु का पालन करने वाले लोगों की एक नई पीढ़ी के लिए इन महत्वपूर्ण सत्यों की पेशकश करेगा।
इस पुस्तक में 144 प्रश्न एवं उत्तर हैं। यह पुस्तक उन पाठकों को ध्यान में रख कर लिखा है जिनकी दूसरी भाषा अंग्रेजी के रूप में है। इसका निर्माण इस तरह से किया है कि ये अन्य भाषाओं में अनुवाद सरल बनाता है। प्रत्येक प्रश्न के बाद तुरंत एक जवाब है। प्रत्येक जवाब के बाद बाइबिल से अनुभाग है। प्रत्येक बाइबिल चयन में पुस्तक का शीर्षक शामिल है, (उदाहरण के लिए: उत्पत्ति)। पुस्तक के नाम के बाद वह अध्याय जहाँ यह चयन पाया जाता है (उदाहरण के लिए: अध्याय 2)। इसके बाद वह पद जहाँ यह चयन पाया जाता है (उदाहरण के लिए: पद 3)। तो उत्पत्ति अध्याय दो का तीन पद इस तरह दिखेगा: उत्पत्ति 2:3।

रूपांतर सौजन्य: स्पष्ट और सरल मीडिया समूह

संपादकगण
टॉम कैस्टर
सुसन मूर

संपादकीय सहायक:
ली कैस्टर
एंजेला म्कार्टी
एंजेला वेल्टी
जो वेल्टी

संस्करण 2.0 के लिए संपादकीय सहायक:
गैविन क्रोस्ले

सलाह और संपादकीय सहायता विक्लिफ एसोसिएट्स (यू.के.)
माइक बेकर
रुथ लॉयड-स्मिथ
हेलेन पॉकॉक

अनुवादक:
www.christian-translation.com

कुछ जवाब में वाक्य खंडीकरण शामिल होंगे (उदाहरण के लिए: प्रश्न.4). विक्लिफ एसोसिएट्स (यूके) द्वारा इस्तेमाल किए गए लेखन शैली मौखिक विचारों को अलग करने और उन पाठकों को, जिनकी दूसरी भाषा अंग्रेजी है, अधिक स्पष्ट रूप से विचारों को समझाने के लिए है।

भाग एक

परमेश्वर और मनुष्य

सवाल 1 से 26

भाग दो

पाप* और कानून*

सवाल 27 से 62

भाग तीन

मसीह और मुक्ति*

सवाल 63 से 90

भाग चार

आत्मा और चर्च

सवाल 91 से 117

भाग पांच

प्रार्थना और आशा

सवाल 118 से 144

जब आप इस चिन्ह * को देखें, तो इस चिन्ह * से लगा शब्द ये यह दर्शाता है कि यह शब्द सूचि में पाया जाता है।

भाग एक
परमेश्वर और मनुष्य

प्र.1 आपको किसने बनाया?
उ. परमेश्वर ने मुझे बनाया है।

उत्पत्ति 1: 26-27; उत्पत्ति 2:7; प्रेरितों के काम 17:26

प्र.2 परमेश्वर ने और क्या बनाया?
उ. परमेश्वर ने सब कुछ बनाया है।

उत्पत्ति 1:31; भजन संहिता 33: 6-9; कुलुस्सियों 1: 16-17

प्र.3 परमेश्वर ने हमे और बाकी चीजों को क्यों बनाया?
उ. परमेश्वर ने हमे और बाकी चीजों को अपनी महिमा* के लिए बनाया है।

भजन संहिता 19:1; यशायाह 43:7; 1 कुरिन्थियों 10: 31

प्र.4 आप परमेश्वर को महिमा* कैसे दे सकते हैं?
उ. जब हम उनसे प्यार करते हैं और भरोसा रखते हैं तब हम परमेश्वर को महिमा* देते हैं। और जब हम वो करते हैं जो हमे कहा गया है।

मत्ती 5:16; यूहन्ना 14:21; 1 यूहन्ना 5:3

प्र.5 आपको परमेश्वर को महिमा* क्यों देना चाहिए?
उ. क्योंकि उन्होंने हमे बनाया है और हमारा ध्यान रखते हैं

भजन संहिता 145:9; 1 पतरस 5:7; प्रकाशितवाक्य 4:11

प्र.6 कितने परमेश्वर है?
उ. केवल एक ही परमेश्वर है।

व्यवस्थाविवरण 6:4; यशायाह 45:5; यिर्मयाह 10:10

प्र.7 कितने व्यक्तियों में परमेश्वर मौजूद है?
उ. परमेश्वर तीन व्यक्तियों में मौजूद है।

मत्ती 3: 16-17; यूहन्ना 5:23; यूहन्ना 10:30; यूहन्ना 15:26

प्र.8 वे कौन है?

उ. पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा*।

मत्ती 28:19; 2 कुरिन्थियों 13: 14; 1 पतरस 1:2

प्र.9 परमेश्वर क्या है?

उ. परमेश्वर आत्मा* है। उनके पास मनुष्य की तरह शरीर नहीं है।

यूहन्ना 4:24; 2 कुरिन्थियों 3:17; 1 तीमुथियुस 1:17

प्र.10 क्या परमेश्वर का कोई आरम्भ है?

उ. नहीं, परमेश्वर पहले से है और परमेश्वर हमेशा रहेगा।

निर्गमन 3:14; भजन संहिता 90;2; यशायाह 40:28

प्र.11 क्या परमेश्वर बदलते हैं?

उ. नहीं, परमेश्वर हमेशा एक सा है।

भजन संहिता 102:26-27; मलाकी 3:6; इब्रानियों 13:8

प्र.12 परमेश्वर कहाँ हैं?

उ. परमेश्वर सब जगह है।

भजन संहिता 139:7-12; यिर्मयाह 23:23-24; प्रेरितों के काम 17:27-28

प्र.13 क्या आप परमेश्वर को देख सकते हैं?

उ. नहीं, हम परमेश्वर को देख नहीं सकते, पर वो हमे हमेशा देखते हैं।

भजन संहिता 33:13-15; नीतिवचन 5:21; यूहन्ना 1:18; 1 तीमुथियुस 1:17

प्र.14 क्या परमेश्वर सब कुछ जानते हैं?

उ. हाँ, परमेश्वर सब कुछ जानते हैं। हम परमेश्वर से कुछ छिपा नहीं सकते।

1 शमूएल 2:3; नीतिवचन 15:3; इब्रानियों 4:13

प्र.15 क्या परमेश्वर सब कुछ कर सकते हैं?

उ. हाँ, परमेश्वर हर पवित्र चीज़ कर सकते हैं जो वे चाहते हैं।

यशायाह 46:9-10; दानिय्येल 4:34-35; इफिसियों 1:11

प्र.16 परमेश्वर से प्रेम, भरोसा करना और उसकी आज्ञा का पालन करना हम कहाँ से सीख सकते हैं?

उ. परमेश्वर ने अपने वचन, बाइबिल में हमे दिखाया है कि कैसे प्रेम करना और उसकी आज्ञा का पालन करना है।

भजन संहिता 119:104-105; यूहन्ना 20:30-31; 2 तीमुथियुस 3:15

प्र.17 बाइबिल आपको क्या सीखाती हैं?

उ. बाइबिल हमे परमेश्वर कि सच्चाई और यीशु मसीह के माध्यम से दुनिया को बचाने की योजना सीखाती है। और ये हमे हमारी सच्चाई सीखाती है।

भजन संहिता 119:159-160; यूहन्ना 17:17; 2 तीमुथियुस 3:14-17

प्र.18 बाइबिल को किसने लिखा है?

उ. मनुष्य जो पवित्र आत्मा* के द्वारा निर्देशित और सीखाए गए थे।

2 पतरस 1:20-21; 2 पतरस 3:15-16

प्र.19 हमारे पहले माँ बाप कौन थे?

उ. आदम और हव्वा।

उत्पत्ति 3:20; उत्पत्ति 5:1-2

प्र.20 हमारे पहले माँ बाप को परमेश्वर कैसे बनाए थे?

उ. परमेश्वर ने आदम का शरीर भूमि की मिट्टी से रचा। परमेश्वर ने हव्वा को आदम के शरीर से बनाया।

उत्पत्ति 2:7; उत्पत्ति 2:21-23; उत्पत्ति 3:19; भजन संहिता 103:14

प्र.21 परमेश्वर के बानाए हुए सृष्टि से आदम और हव्वा अलग कैसे थे?

उ. परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अपने स्वरुप के अनुसार अपने समानता में बनाया।

उत्पत्ति 1: 26-27

प्र.22 हम आदम और हव्वा में परमेश्वर की छवि कैसे देख सकते हैं?

उ. परमेश्वर ने उन्हें अपने सृष्टी पर अधिकार दिया। वे सच को समझ सकते थे। जो सही था उसे प्यार कर सकते थे। जो सुन्दर है उसकी आनंद ले सकते थे। जो परमेश्वर को भाता है वे कर सकते थे। वे परमेश्वर और एक दुसरे के साथ बात कर सकते थे।

उत्पत्ति 1: 26-27; उत्पत्ति 2: 7-9; भजन संहिता 147: 10-11; फिलिप्पियों 4: 8

प्र.23 परमेश्वर ने आदम और हव्वा को शरीर के अलावा और क्या दिया?

उ. परमेश्वर ने उन्हें कभी न मरने वाली आत्मा* दी।

उत्पत्ति 2: 7; व्यवस्थाविवरण 6: 5; सभोपदेशक 12: 7; मत्ती 16:26

प्र.24 क्या शरीर के साथ आपके पास आत्मा* भी है?
उ. हाँ, हमारे पास कभी न मरने वाली आत्मा* है।

जकर्याह 12: 1; प्रेरितों के काम 7:59; 2 कुरिन्थियों 5: 8

प्र.25 जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया तब वे कैसे थे?
उ. परमेश्वर ने उन्हें पवित्र* और आनंदित बनाया। वे परमेश्वर के साथ उनकी बनायी हुई वाटिका में रहते थे।

उत्पत्ति 1: 26-28; उत्पत्ति 2: 15-17; उत्पत्ति 2:25; भजन संहिता 8: 4-8

प्र.26 परमेश्वर आदम और हव्वा से क्या चाहते थे?
उ. परमेश्वर चाहते थे कि वे उन पर पूरी तरह से भरोसा रखे और उनकी आज्ञा का पालन करे।

उत्पत्ति 2: 15-17; भजन 8: 4-8

भाग दो
पाप और व्यवस्था

प्र.27 क्या आदम और हव्वा परमेश्वर की बात मानकर हमेशा के लिए पवित्र* और आनंदित रहे?

उ. नहीं, उन्होंने आज्ञा का पालन नहीं किया। वे परमेश्वर के खिलाफ पाप को चुने।

उत्पत्ति 3: 6-8

प्र.28 पाप* क्या है?

उ. पाप वो है जब हम परमेश्वर की कही हुई बात को नहीं करते है। और जब हम वो करते हैं जो परमेश्वर ने मना किया है।

रोमियो 01:32; याकूब 2: 10-11; याकूब 4:17; 1 यूहन्ना 3: 4

प्र.29 हरेक पाप* का अंजाम क्या है?

उ. हर पाप* क्रोध और परमेश्वर की सजा के हकदार हैं।

व्यवस्थाविवरण 27:26; रोमियो 01:18; रोमियो 6:23; इफिसियों 5: 6

प्र.30 हमारे पहले माँ बाप का पाप* क्या था?

उ. उन्होंने वो फल खाया जो परमेश्वर ने खाने से मना किया था।

उत्पत्ति 2: 16-17; उत्पत्ति 3: 6

प्र.31 पाप* करने के लिए उन्हें किसने लोभित किया?

उ. शैतान हव्वा को लोभित किया और वो आदम को फल दी।

उत्पत्ति 3: 1-5; यूहन्ना 8:44; 2 कुरिन्थियों 11: 3; प्रकाशितवाक्य 12: 9

प्र.32 जब हमारे पहले माँ बाप पाप किए तब ये संसार को क्या हुआ?

उ. परमेश्वर ज़मीन को श्राप दिए। और जैसे परमेश्वर ने उन्हें चेतावनी दी थी, मृत्यु संसार में आई।

उत्पत्ति 2: 15-17; उत्पत्ति 3: 16-17

प्र.33 हमारे पहले माँ बाप को क्या हुआ जब वे पाप किए?

उ. परमेश्वर ने उन्हें अदन की बाटिका में से निकाल दिया। वे अब पवित्र* और आनंदित नहीं रहे। इसके बजाय, वे पापी* - दोषी, लज्जित और डरे हुए थे।

उत्पत्ति 3: 8-13; उत्पत्ति 3: 16-19; उत्पत्ति 3:23

प्र.34 चूँकि आदम ने पाप किया, उसके पीछे जीने वालों को क्या हुआ?

उ. आदम और हव्वा के बाद पैदा होने वाला हरेक व्यक्ति पाप* में जन्मा।

भजन संहिता 51: 5; रोमियों 5: 18-19; 1 कुरिन्थियों 15: 21-22

प्र.35 क्या परमेश्वर संसार को श्राप में छोड़ दिया? क्या उन्होंने लोगों को उनके पाप में त्याग दिया?

उ. नहीं, परमेश्वर ने उन्हें बचाने का निर्णय लिया। परमेश्वर एक उद्धारकर्ता भेजने का वादा किया।

मत्ती 1:21; यूहन्ना 3: 16-17; 1 यूहन्ना 4:14

प्र.36. एक वाचा क्या है?

उ. एक वाचा दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच एक गंभीर वादा है।

प्र.37. परमेश्वर इस्राएली लोगों के साथ क्या वाचाएं बांधे थे?

उ. परमेश्वर इब्राहीम के परिवार को एक महान राष्ट्र के रूप में बनाने का वादा किए। अब्राहम के माध्यम से सभी देशों को आशीर्वाद देने का वादा किया।

उन्होंने मूसा को व्यवस्था दिया। उन्होंने, मूसा के साथ रहने और इस्राएल को आशीर्वाद देने का वादा किया अगर वे आज्ञापालन करतें और उनके दिए हुए व्यवस्था पर चलतें।

परमेश्वर ने दाऊद से वादा किया कि उसके बेटों में से एक महान राजा होगा जो हमेशा के लिए राज्य करेगा।

परमेश्वर ने वादा किया कि एक दिन वह एक नई वाचा बंधेगा। उन्होंने वादा किया कि वह लोगों के पापों को क्षमा करेगा और लोगों के दिलों को बदलेगा।

उत्पत्ति 12:1-3; उत्पत्ति 15; निर्गमन 24:3-7; 2 शमूएल 7:16; यिर्मयाह 31:31-34

दस आज्ञाएँ

प्र.38. दस आज्ञाएँ क्या हैं?

उ. दस आज्ञाएँ वो वचन हैं जो परमेश्वर ने मूसा को दिया, इस्राएल* के लोगों के लिए। परमेश्वर खुद पत्थर की दो तख्तियों पर दस आज्ञाओं को लिखे।

प्र.39. क्या है वो आज्ञाएँ?

उ. मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।

अपने लिये कोई मूर्ति* खोदकर न बनाना, न उनकी आराधना* करना।

अपने प्रभु* परमेश्वर का नाम गलत तरीके से न लेना।

विश्रामदिन* (सब्त के दिन) को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना।

अपने पिता और अपनी माता का आदर* करना।

किसी की हत्या न करना।

व्यभिचार* न करना।

चोरी न करना।

अपने पड़ोसी या किसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना।

जो कुछ पड़ोसी के घर का है उसका लालच न करना।

निर्गमन 20: 1-17

प्र.40. पहली आज्ञा क्या है?

उ. पहली आज्ञा है: मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।

निर्गमन 20: 3**;** यशायाह 45: 5-6

प्र.41. पहली आज्ञा क्या सिखाती है?

उ. पहली आज्ञा हमें सिर्फ परमेश्वर की आराधना* करने के लिए सिखाती है।

भजन 44: 20-21**;** मत्ती 4:10**;** प्रकाशितवाक्य 22: 8-9

प्र.42. दूसरी आज्ञा क्या है?

उ. दूसरी आज्ञा है: अपने लिये कोई मूर्ति* खोदकर न बनाना, न उनकी आराधना* करना।

निर्गमन 20: 4-6**;** व्यवस्थाविवरण 5: 8-10

प्र.43. दूसरी आज्ञा क्या सिखाती है?

उ. दूसरी आज्ञा हमें मूर्तियों या प्रतिमाओं की आराधना नहीं करने के लिए सिखाती है।

यशायाह 44:10-11; यशायाह 46:5-9; प्रेरितों के काम 17:29

प्र.44. तीसरी आज्ञा क्या है?

उ. तीसरी आज्ञा है: अपने प्रभु* परमेश्वर का नाम गलत तरीके से न लेना।

निर्गमन 20: 7; व्यवस्थाविवरण 5:11

प्र.45. तीसरी आज्ञा क्या सिखाती है?

उ. तीसरी आज्ञा हमें यह सिखाती है कि हमें परमेश्वर के नाम का ऐसा इस्तेमाल नहीं करना चाहिए जिससे उनका आदर* न हो।

यशायाह 08:13; भजन 138: 2; प्रकाशितवाक्य 15:3-4

प्र.46. चौथी आज्ञा क्या है?

उ. चौथी आज्ञा है: विश्रामदिन* (सब्त के दिन) को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना।

निर्गमन 20: 8-11; व्यवस्थाविवरण 5: 12-15

प्र.47. चौथी आज्ञा क्या सिखाती है?

उ. चौथी आज्ञा हमें हमारे विश्राम में, हमारे कार्यों में और हमारी आराधना में परमेश्वर का आदर* करना सिखाती है।

निर्गमन 16:23; यशायाह 58: 13-14

प्र.48. पांचवी आज्ञा क्या है?

उ. पांचवी आज्ञा है: अपने पिता और अपनी माता को आदर* दीजिए।

निर्गमन 20:12; व्यवस्थाविवरण 5:16

प्र.49. पांचवी आज्ञा क्या सिखाती है?

उ. पांचवी आज्ञा हमें हमारे माता-पिता को प्यार करने और आज्ञा का पालन करने के लिए सिखाती है।

नीतिवचन 1: 8; इफिसियों 6: 1-3; कुलुस्सियों 3:20

प्र.50. छठी आज्ञा क्या है?

उ. छठी आज्ञा है: किसी की हत्या न करना।

निर्गमन 20:13; व्यवस्थाविवरण 5:17

प्र.51. छठी आज्ञा क्या सिखाती है?

उ. छठी आज्ञा हमें न ही अन्य लोगों से नफरत और न किसी के प्राण लेने कि लिए सिखाती है।

उत्पत्ति 9: 6**;** मत्ती 5: 21-22**;** 1 यूहन्ना 3:15

प्र.52. सातवीं आज्ञा क्या है?

उ. सातवीं आज्ञा है: व्यभिचार* न करना।

निर्गमन 20:14**;** व्यवस्थाविवरण 5:18

प्र.53. सातवीं आज्ञा क्या सिखाती है?

उ. सातवीं आज्ञा हमें यह सिखाती है कि हमें अपने पति या पत्नी को छोड़ किसी और के साथ शारीरिक (यौन) संबंध नहीं रखना चाहिए।

मत्ती 5: 27-28**;** इफिसियों 5: 3-4

प्र.54. आठवीं आज्ञा क्या है?

उ. आठवीं आज्ञा है: चोरी न करना।

निर्गमन 20:15; व्यवस्थाविवरण 5:19

प्र.55. आठवीं आज्ञा क्या सिखाती है?

उ. आठवीं आज्ञा हमें यह सिखाती है कि अन्य लोगों की चीज़ें हमें नहीं लेना चाहिए।

निर्गमन 23: 4; नीतिवचन 21: 6-7; इफिसियों 4:28

प्र.56. नौवीं आज्ञा क्या है?

उ. नौवीं आज्ञा यह है: अपने पड़ोसी के खिलाफ झूठ मत बोलना।

निर्गमन 20:16; व्यवस्थाविवरण 5:20

प्र.57. नौवीं आज्ञा क्या सिखाती है?

उ. नौवीं आज्ञा हमें ईमानदार होने और सच बोलने के लिए सिखाती है।

भजन 15: 1-3; नीतिवचन 12:17; 1 कुरिन्थियों 13: 6

प्र.58. दसवीं आज्ञा क्या है?

उ. दसवीं आज्ञा है: अपने पड़ोसी के किसी भी वस्तु की कुछ भी लालच नहीं करना।

निर्गमन 20:17; व्यवस्थाविवरण 5:21

प्र.59. दसवीं आज्ञा क्या सिखाती है?

उ. दसवीं आज्ञा हमें यह सिखाती है कि जो हमारे पास है उसमें हमें संतुष्ट* रहना चाहिए।

फिलिप्पियों 4:11; 1 तीमुथियुस 6: 6; इब्रानियों 13: 5

प्र.60. क्या यहूदी लोगों ने उन आज्ञाओं का पालन किया जो परमेश्वर ने मूसा को दिया?

उ. नहीं। उन्होंने परमेश्वर के कानून को तोड़ा और परमेश्वर ने उन्हें दंडित किया, जैसा उस ने उन्हें चेतावनी दी थी।

प्र.61. क्या कोई भी व्यक्ति पूर्ण रूप से परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर सकते हैं?

उ. आदम ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। उस समय के बाद से, कोई भी इंसान पूर्ण रूप से परमेश्वर के सभी आज्ञाओं को पालन करने में सफल नहीं रहा है।

प्र.62. दस आज्ञाएँ हमें क्या दर्शाती हैं?

उ. दस आज्ञाएँ हमें यह सिखाती है कि परमेश्वर पवित्र और भला है। यह हमें परमेश्वर को और हमारे पडोसी को प्रेम करना सिखाती है। यह हमें दर्शाती हैं कि हम पापी* हैं और परमेश्वर की बात नहीं मानते हैं। यह हमें दर्शाती हैं कि हमें एक उद्धारकर्ता* की ज़रूरत है।

सभोपदेशक 12:13; 1 तीमुथियुस 1:8-9; रोमियों 03:20; 05:13; 7:7-11; गलातियों 3:19-24

भाग तीन
मसीह और उद्धार*

प्र.63 उद्धारकर्ता* कौन है?

उ. पापियों* का एकलौता उद्धारकर्ता प्रभु* यीशु मसीह है।

लूका 2:11; प्रेरितों के काम 4: 11-12; 1 तीमुथियुस 1:15

प्र.64 यीशु मसीह कौन है?

उ. यीशु मसीह परमेश्वर का सनातन* पुत्र है।

यूहन्ना 1: 1,14,18; यूहन्ना 3: 16,18; गलातियों 4: 4; कुलुस्सियों 1: 15-18; इब्रानियों 1: 1-3; 1 यूहन्ना 5:20

प्र.65 परमेश्वर अपने पुत्र को इस संसार में क्यों भेजे?

उ. परमेश्वर अपने पुत्र को भेजे क्योंकि वे हम से प्यार करते हैं। उन्होंने अपने पुत्र को भेजा क्योंकि वो करुणा और कृपा* का परमेश्वर है।

भजन संहिता 103: 8-11; यूहन्ना 3: 16-17; रोमियों 5: 7-8; इफिसियों 2: 4-5; 1 यूहन्ना 4: 9-10

प्र.66 क्या यीशु मसीह परमेश्वर और मनुष्य दोनों है?

उ. हाँ, यीशु पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मनुष्य थे।

यूहन्ना 1: 1-3, 14; फिलिप्पियों 2: 5-11; कुलुस्सियों 2: 9; इब्रानियों 2: 14-18

प्र.67 उद्धारकर्ता* यीशु मसीह ने क्या काम किया?

उ. उन्होंने परमेश्वर की हर बात मानी और वो पापियों का सज़ा खुद पर लिए।

रोमियो 8:3-4; फिलिप्पियों 2:7-8; इब्रियों 4:15; इब्रानियों 9:14-15

प्र.68 यीशु क्यों मरा?

उ. यीशु पापी* लोगों के स्थान पर मर के परमेश्वर के क्रोध को दूर किया।

मरकुस 10:45; 2 कुरिन्थियों 5: 19-21; गलातियों 3:13

प्र.69 परमेश्वर का सनातन* पुत्र, पापी* लोगों के स्थान पर कैसे पीड़ित हो सकता है?

उ. यीशु, परमेश्वर का पुत्र, एक इंसान बना।

यूहन्ना 1:14; गलातियों 4: 4,5; कुलुस्सियों 2:9

प्र.70 परमेश्वर का पुत्र एक इंसान कैसे बना?

उ. वह पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ-धारण* किए और कुंवारी* मरियम से जन्मे।

यशायाह 7:14; मत्ती 1: 18-21

प्र.71 यीशु मसीह किस प्रकार का जीवन इस संसार में जिए?

उ. एक साधारण, आदरणीय* और विनम्र जीवन।

मत्ती 8:20; मत्ती 11: 28-30; लूका 4: 18-19; 2 कुरिन्थियों 8: 9; 2 कुरिन्थियों 10: 1

प्र.72 क्या प्रभु* यीशु मसीह कभी पाप* किए?

उ. नहीं, वह पवित्र और निष्कलंक थे।

यूहन्ना 8:29; 2 कुरिन्थियों 5:21; इब्रानियों 7:26; 1 पतरस 2: 21-23

प्र.73 यीशु मसीह किस प्रकर का मृत्यु से मरे?

उ. मसीह क्रूस* पर मरे.

लूका 23:33; गलातियों 3:13; फिलिप्पियों 2: 8

प्र.74 क्या मसीह मरने के बाद कब्र में ही रहे?

उ. नहीं, मसीह तीसरे दिन मृत्युकों में से जी उठे।

मत्ती 28: 5-7; लूका 24: 5-8; रोमियो 4:25; 1 कुरिन्थियों 15: 3,4

प्र.75 परमेश्वर किन लोगों को उनके पाप के परिणाम से बचाएगा?

उ. परमेश्वर उन्हें बचाएंगें जो पाप* से पश्चताप करेंगे*। और जो प्रभु* यीशु मसीह पर विश्वास रखते हैं।

मरकुस 1: 14,15; यूहन्ना 3: 16-18; प्रेरितों के काम 20:21

प्र.76 पश्चताप* करने का मतलब क्या है?

उ. पश्चाताप* करने का मतलब है अपने पापों* के लिए क्षमा माँगना। और अपने पापों* से मन फिराना क्योंकि ये परमेश्वर को अपमानित करता है।

लूका 19: 8-10; 2 कुरिन्थियों 7: 9-10; 1 थिस्सलुनीकियों 1: 9-10

प्र.77 मसीह पर विशवास रखना या श्रधा* रखने का क्या मतलब है?

उ. मसीह पर श्रधा* रखने का मतलब है यीशु में विश्वास रखना। हमारे बचाव* के लिए हम सिर्फ उन्ही पर भरोसा* रख सकते हैं।

यूहन्ना 14: 6; प्रेरितों के काम 4:12; 1 तीमुथियुस 2: 5; 1 यूहन्ना 5: 11-12

प्र.78 क्या आप अपने शक्ति से पश्चाताप* करके और मसीह पर विशवास कर सकते हैं?

उ. नहीं, हमे पवित्र आत्मा* के सहायता की जरुरत है।

यिर्मयाह 13:23; यूहन्ना 3: 5-6; यूहन्ना 6:44; 1 कुरिन्थियों 2:14

प्र.79. मसीह के बारे में सच, लोग कहाँ से सुन सकते हैं?

उ. सुसमाचार* में, अच्छी ख़बर जो सभी लोगों के लिए एक उद्धारकर्ता* प्रदान करता है।

मरकुस 1: 1; प्रेरितों के काम 15: 7; रोमियों 1: 16-17

प्र.80. यीशु हमरे उद्धारकर्ता* अब हमारे लिए क्या बन गए हैं?

उ. यीशु मसीह हमारे भविष्यवक्ता*, हमारे याजक, और हमारे राजा बन गए हैं।

मत्ती 13:57; यूहन्ना 18:37; इब्रानियों 1: 1-3; इब्रानियों 5: 5-6; प्रकाशिवाक्य 1: 5

प्र.81. यीशु मसीह कैसे एक भविष्यवक्ता* हैं?

उ. क्योंकि वो हमें दिखाते हैं परमेश्वर कौन हैं। और हमें सिखाते हैं, कैसे उसे खुश करना है।

व्यवस्थाविवरण 18:18; यूहन्ना 1:18; यूहन्ना 4: 25-26; 03:22 अधिनियमों; 1 यूहन्ना 5:20

प्र.82. हमें मसीह की जरूरत एक भविष्यवक्ता* के रूप में क्यों है?

उ. क्योंकि हम उनके बिना परमेश्वर को नहीं जान सकते हैं।

मत्ती 11: 25-27; यूहन्ना 17: 25-26; 1 कुरिन्थियों 2: 14-16

प्र.83. यीशु मसीह कैसे एक याजक हैं?

उ. वो हमारी जगह मारे गए और वह हमारे लिए परमेश्वर से बात करते हैं।

भजन 110: 4; इब्रानियों 4: 14-16; इब्रानियों 7: 24-25; 1 यूहन्ना 2: 1-2

प्र.84. हमें मसीह की जरूरत एक याजक के रूप में क्यों है?

उ. क्योंकि हमारे पाप ने हमें दोषी और शर्मिंदा कर दिया है।

नीतिवचन 20: 9; सभोपदेशक 7:20; यशायाह 53: 6; रोमियो 3: 10-12; रोमियो 3:23; याकूब 2:10

प्र.85. यीशु मसीह कैसे एक राजा हैं?

उ. वह हम पर शासन करते हैं और हमारा बचाव करते हैं।

भजन 2: 6-9; इफिसियों 1: 19-23; प्रकाशितवाक्य 15: 3-4

प्र.86. हमें मसीह की जरूरत एक राजा* के रूप में क्यों है?

उ. क्योंकि हम कमजोर और भयभीत हैं।

2 कुरिन्थियों 12: 9-10; फिलिप्पियों 4:13; कुलुस्सियों 1: 11-13; इब्रानियों 13: 5-6; 2 तीमुथियुस 1:12

प्र.87 यीशु मसीह में विशवास करने पर हमे कौन सी आशीषें* मिलती है?

उ. परमेश्वर हमे माफ़ करते हैं और हमे धर्मी टहलाते हैं।

परमेश्वर हमे अपने प्रिय बच्चे के रूप में हमे अपने परिवार में ग्रहण करते हैं।

परमेश्वर हमे अपने हृदय में और व्यवहार में पवित्र बनाता है।

परमेश्वर हमे पुनरुत्थान* पर शरीर और आत्मा* में सिद्ध बनाते हैं।

रोमियों 5:18; गलातियों 4: 4-6; इफिसियों 1: 5; इब्रानियों 10: 10-14; 1 यूहन्ना 3: 2

प्र.88 क्या परमेश्वर हमे ये आशीषें* इसलिए देता क्योंकि हमने ये अर्जित किए हैं?

उ. नहीं, अपने अनुग्रह* की वजह से परमेश्वर हमे ये आशीषें* देते हैं। हम इसके लायक नहीं और न हम इन्हें कमा सकते हैं।

यशायाह 64: 6; इफिसियों 2: 8-9; तीतुस 3: 4-7

प्र.89 क्या परमेश्वर अपनी आशीषें* उनसे कभी हटाएंगे जो सच्चा पश्चाताप* करके विशवास करते हैं?

उ. नहीं, यीशु कभी नहीं छोड़ेगा जो अपने बचाव* के लिए उन पर भरोसा* रखते हैं।

यूहन्ना 10: 27-30; रोमियो 8: 38-39; फिलिप्पियों 1: 6; 1 पतरस 1: 3-5

प्र.90 परमेश्वर का अनुग्रह* क्या है?

उ. परमेश्वर का अनुग्रह* हमारे लिए उनका प्यार और भलाई है जिसके हम लायक नहीं हैं।

निर्गमन 34: 6; इफिसियों 1: 7-8; 2 कुरिन्थियों 8: 9

भाग चार
आत्मा और कलीसिया

प्र.91. परमेश्वर उन सभों से क्या चाहते हैं जिसने यीशु को उद्धारकर्ता करके विश्वास किया है?

उ. वह चाहते है कि वे दिल* में और व्यवहार में पवित्र बने। वह चाहते हैं कि वे यीशु की तरह बने।

इफिसियों 1: 4; 1 पतरस 1:15; 2 कुरिन्थियों 7: 1

प्र.92. परमेश्वर हमे दिल* में और व्यवहार में पवित्र* कैसे बनाते हैं?

उ. परमेश्वर हमे एक नया हृदय* देते हैं। और हमे पवित्र आत्मा देते हैं।

यहेजकेल 36:26; रोमियो 8: 1-14; गलातियों 5: 22-26; इफिसियों 1:13

प्र.93. पवित्र आत्मा* कौन है?

उ. पवित्र आत्मा* परमेश्वर है। परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र ने पवित्र आत्मा को भेजा।

मत्ती 28:19; यूहन्ना 14:26, यूहन्ना 15:26; 2 कुरिन्थियों 13:14

प्र.94. पवित्र आत्मा* हमारे लिए अब क्या बन गया है?

उ. पवित्र आत्मा यीशु पर भरोसा करने वालों के लिए शान्तिदाता, सहायक, और मार्गदर्शक है।

यूहन्ना 16: 7-8,12-15; रोमियो 8: 14-16; 1 कुरिन्थियों 6:19; इफिसियों 1:14

प्र.95. हमे कैसे पता चलेगा कि पवित्र आत्मा हमे पवित्र* करती है?

उ. हम और अधिक अपने उधारकर्ता यीशु मसीह के जैसे बनेंगे। हम आत्मा के फल को अपने हृदय* और व्यवहार में देखेंगे।

कुलुस्सियों 1: 9-12; इफिसियों 3:16

प्र.96. आत्मा के फल क्या हैं?

उ. आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं।

गलातियों 5: 22-23

प्र.97. अगर आप यीशु के पीछे चलेंगे तो क्या आप हमेशा सफल* रहेंगे?

उ. नहीं, कभी कभी मुझे परेशानी हो सकती है। कभी कभी हमे यीशु कि तरह पीड़ा या बैर सहना पड़ सकता है।

यूहन्ना 15:18-19; 2 तीमुथियुस 3:12; रोमियो 8:23-25; याकूब 1:2-4; 1 पतरस 4:12-13

प्र.98. परमेश्वर आपको परेशानी के समय में कैसे मदद करते हैं?

उ. वो शान्ति देने वाली आत्मा देता है। हमारी देखभाल के लिए कलीसिया देता है। वह मुझे मेरे अच्छे के लिए और उसकी महिमा के लिए सब बातों में काम करने के लिए अपना वादा देता है।

रोमियों 5: 3-5; रोमियों 8:18; 1 थिस्सलुनीकियों 5:11; 1 पतरस 4: 12-19; 1 पतरस 5:10

प्र.99. सार्वभौमिक कलीसिया क्या है?

उ. सार्वभौमिक कलीसिया* परमेश्वर द्वारा पाप से बचाए* लोगों से बनाया गया है। कलीसिया* परमेश्वर पिता का परिवार है। पुत्र मसीह का देह है। पवित्र आत्मा* का रहने का जगह है।

1 कुरिन्थियों 12:27; इफिसियों 3: 14-15; इफिसियों 5:23; कुलुस्सियों 1:24; इब्रानियों 2:11

प्र.100. स्थानीय कलीसिया क्या है?

उ. स्थानीय कलीसिया* यीशु मसीह में विश्वास और उनकी शिक्षाओं का पालन करने वाले लोगों का एक समूह है। वे एक साथ परमेश्वर की आराधना करते हैं । वे शास्त्रों को एक साथ सुनते हैं और सीखाते हैं। वे एक दूसरे के देखभाल और परवाह करते हैं। वे एक साथ प्रार्थना करते हैं और परमेश्वर के राज्य* को बढाने के लिए एक साथ काम करते हैं। वे विश्वासियों को बपतिस्मा देते हैं और प्रभु भोज खाते हैं।

मत्ती 28: 19-20; प्रेरितों के काम 2: 41-42; प्रेरितों के काम 8:36-39; प्रेरितों के काम 14:23; रोमियों 6: 1-5; 1 कुरिन्थियों 11: 23-26; तीतुस 1: 5

प्र.101. क्या आपको स्थानीय कलीसिया का भाग होना चाहिए?

उ. हाँ, स्थानीय कलीसिया एक समुदाय है जो हमे बढ़ने में और हमारे विश्वास में मजबूत रहने में मदद करती है। यहीं पर हम यीशु की नई आज्ञापालन करने के लिए सीखते हैं।

इब्रानियों 10: 24-25

प्र.102. यीशु ने कलीसिया को कौन सी नई आज्ञा दी?

उ. यीशु ने कहा, “एक दूसरे से प्रेम रखो. जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दुसरे से प्रेम रखो।"

यूहन्ना 13:34

प्र.103. हम ये प्रेम एक दुसरे को कैसे दिखा सकते हैं?

उ. जब हम दूसरों को कृपा दिखाते हैं, एक दुसरे के लिए प्रार्थना करते हैं, और एक दुसरे को माफ़ करते है हम ये प्यार दिखाते हैं। जब हम एक दुसरे को आदर* देते हैं, मदद करते हैं और प्रोत्साहित करते हैं हम ये प्यार दिखाते हैं। हम जब सच बोलते हैं और एक दुसरे की जरुरत को अपने से पहले रखते हैं तब हम ये प्यार दिखाते हैं।

रोमियों 12:10; इफिसियों 4:32; कुलुस्सियों 3: 9,13; 1 थिस्सलुनीकियों 4:18; याकूब 5:16

प्र.104. बपतिस्मा* क्या है?

उ. बपतिस्मा* में कलीसिया* का प्रधान एक व्यक्ति को कुछ पल के लिए पानी में डुबोता है। उसके बाद उस व्यक्ति को पानी से बाहर लाया जाता है। वह इसे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा* के नाम में करते हैं।

मत्ती 3: 6,16; मरकुस 1: 5; प्रेरितों के काम 8:12

प्र.105. बपतिस्मा* कौन ले सकता है?

उ. बपतिस्मा* उन सबके लिए है जो अपने पापों* से प्रायश्चित* किए हैं। ये उनके लिए हैं जो उद्धार* के लिए मसीह में विश्वास करते हैं।

प्रेरितों के काम 2: 38,39; प्रेरितों के काम 8: 36-37; प्रेरितों के काम 16: 30-33

प्र.106. बपतिस्मा* का मतलब क्या है?

उ. बपतिस्मा* विश्वासियों का मसीह के साथ मिले रहने का एक चिन्ह है जब वो मरे, गाड़े गए और मृतकों में से जी उठे। ये बताता है कि हम कलीसिया का एक हिस्सा हैं।

प्रेरितों के काम 16: 30-33; रोमियों 6: 3-5; कुलुस्सियों 2:12

प्र.107. मसीही लोग एक दुसरे को अपने लिए यीशु का मृत्यु कैसे याद दिलाते हैं?

उ. हम एक साथ प्रभु भोज में हिस्सा लेते हैं।

मरकुस 14: 22-24; 1 कुरिन्थियों 11: 23-29

प्र.108. प्रभु* भोज क्या है?

उ. प्रभु* भोज में हम रोटी खाते हैं और कटोरे में से पीते हैं। हम ये यीशु मसीह की मृत्यु को याद करने के लिए करते हैं।

मरकुस 14: 22-24; 1 कुरिन्थियों 11: 23-29

प्र.109. रोटी का मतलब क्या है?

उ. टुटा हुआ रोटी मसीह का टुटा हुआ देह बताती है। वो हमारे पापों* के लिए एक बार मरे।

मत्ती 26:26; 1 कुरिन्थियों 11:24

प्र.110. कटोरा का मतलब क्या है?

उ. कटोरा मसीह का लहू के बारे में बताता हैं। वो हमारे उद्धार* के लिए एक बार खून बहाए।

मत्ती 26: 27-28; 1 कुरिन्थियों 11:25; इब्रानियों 9: 26-28

प्र.111. प्रभु भोज कौन खा सकता है?

उ. प्रभु भोज उन सबके लिए है जो अपने पापों* से प्रायश्चित* किए हैं। ये उनके लिए हैं जो उद्धार* के लिए मसीह में विश्वास करते हैं।

1 कुरिन्थियों 10: 16,17; 1 कुरिन्थियों 11: 18-29

प्र.112. कलीसिया को बपतिस्मा* और प्रभु* भोज किसने दिया?

उ. प्रभु* यीशु मसीह।

मत्ती 26: 26-29; मत्ती 28: 18-20

प्र.113. यीशु मसीह कलीसिया* को बपतिस्मा* और प्रभु* भोज क्यों दिए?

उ. यीशु मसीह ये दर्शाने के लिए दिए कि उनके लोग उन्ही के है। ये हमे उन कार्यों को याद दिलाती है जो यीशु हमारे लिए किए हैं।

मत्ती 28:19; रोमियों 6: 1-5; 1 कुरिन्थियों 11: 23-26

प्र.114. मसीह का कलीसिया* के लिए आखरी आज्ञा क्या थी?

उ. "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं"॥

मत्ती 28: 18-20

प्र.115. प्रभु* का दिन कौन सा है?

उ. प्रभु* का दिन हफ्ता का पहला दिन है। पूर्व मसीही लोग आराधना* करने के लिए ये दिन एकत्र होते थे।

प्रेरितों के काम 20: 7; 1 कुरिन्थियों 16: 2; प्रकाशितवाक्य 1:10

प्र.116. ये प्रभु* का दिन क्यों कह जाता है?

उ. क्योंकि इस दिन मसीह मृतकों में से जी उठे।

मत्ती 28: 1-6; लूका 24: 1-6; यूहन्ना 20: 1

प्र.117. प्रभु* का दिन को हम कैसे अच्छी तरह से व्यतीत कर सकते हैं?

उ. प्रभु* का दिन सबसे अच्छी तरह से व्यतीत तब होता हैं जब हम परमेश्वर के लोगों के साथ उनकी आराधना करने के लिए एकत्र होते है और एक दुसरे को विश्वास में प्रोत्साहित करते हैं

भजन संहिता 27:4; रोमियो 12:9-13; कुलुस्सियों 3:16

भाग पांच

प्रार्थना और आशा

प्र.118. प्रार्थना क्या है?

उ. जब हम परमेश्वर से बात करते हैं, वो प्रार्थना है। हम उन्हें उनकी भलाई के लिए धन्यवाद देते हैं। हम अपने पापों* की क्षमा मांगते हैं। हम वो चीजों को मांगते हैं जो उनको अच्छा लगता है।

मत्ती 6:6; फिलिप्पियों 4:6; 1 यूहन्ना 5:14

प्र.119. हमे किसके नाम में प्रार्थना करनी चाहिए?

उ. हमे यीशु के नाम में प्रार्थना करनी चाहिए।

यूहन्ना 14:13-14; यूहन्ना 16:23

प्र.120. हमे कब और कहाँ प्रार्थना करनी चाहिए?

उ. हम परमेश्वर से प्रार्थना कभी भी कहीं भी कर सकते हैं।

मत्ती 6:6; इफिसियों 6:18**;** प्रेरितों के काम 21: 5**;** कुलुस्सियों 4: 2

प्र.121. यीशु ने हमे प्रार्थना सीखाने के लिए क्या दिए?

उ. यीशु हमे प्रभु की प्रार्थना दिए।

मत्ती 6: 9-15; लूका 11: 2-4

प्र.122. प्रभु की प्रार्थना क्या है?

उ. "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग* में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।
तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।
हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।
और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर।
और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं।"

मत्ती 6: 9-13;

प्र.123. प्रभु की प्रार्थना में कितने बिनती है?

उ. छः बिनती हैं।

प्र.124. पहली बिनती क्या है?

उ. "तेरा नाम पवित्र* माना जाए"।

मत्ती 6: 9; लूका 11: 2

प्र.125. पहली बिनती में हम क्या प्रार्थना करते हैं?

उ. हम प्रार्थना करते हैं कि सारे लोग परमेश्वर के नाम की स्तुति करें।

भजन संहिता 8: 1-2; भजन संहिता 72: 18-19; भजन संहिता 113: 1-3

प्र.126. दूसरी बिनती क्या है?

उ. "तेरा राज्य* आए"

मत्ती 6:10; लूका 11: 2

प्र.127. दूसरी बिनती में हम क्या प्रार्थना करते हैं?

उ. हम प्रार्थना करते हैं कि दुनिया के सारे लोग सुसमाचार को सुनेंगे और विशवास करेंगे। हम प्रार्थना करते हैं कि वे यीशु को प्रभु* मानेंगे।

यूहन्ना 17: 20-21; प्रेरितों के काम 8:12; प्रेरितों के काम 28**:** 30-31; प्रकाशितवाक्य 11:15

प्र.128. तीसरा बिनती क्या है?

उ. "तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग* में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो"।

मत्ती 6:10;

प्र.129. तीसरी बिनती में हम क्या प्रार्थना करते हैं?

उ. हम प्रार्थना करते हैं कि पृथ्वी के लोग वैसे ही करें जैसे परमेश्वर चाहते हैं, हर काम में, जैसे स्वर्गदूत* स्वर्ग* में करते हैं।

भजन संहिता 103: 19-22; भजन संहिता 143: 10

प्र.130. चौथा बिनती क्या है?

उ. "हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे"।

मत्ती 06:11; लूका 11: 3

प्र.131. चौथी बिनती में हम क्या प्रार्थना करते हैं?

उ. हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमे वो सारी चीज़े दे जो हमारे शारीर के लिए जरुरत है।

भजन संहिता 145: 15-16; नीतिवचन 30: 8-9; मत्ती 6: 31-33

प्र.132. पांचवा बिनती क्या है?

उ. "और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों* को क्षमा* किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों* को क्षमा कर"।

मत्ती 06:12; लूका 11: 4

प्र.133. पांचवी बिनती में हम क्या प्रार्थना करते हैं?

उ. हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमारे पापों* को क्षमा* करें। और हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमे दूसरों को माफ़ करने में मदद करें जिसने भी हमे चोट पहुंचाया है।

भजन संहिता 51: 2-3; मत्ती 5: 23-24; इफिसियों 4:32

प्र.134. छठी बिनती क्या है?

उ. "और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा"

मत्ती 6:13; लूका 11: 4

प्र.135. छठे बिनती में हम क्या प्रार्थना करते हैं?

उ. हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमे पाप* से दूर रखे। और बुराई* से बचाये।

भजन संहिता 119: 11; 1 कुरिन्थियों 10:13; 2 तीमुथियुस 4:18

प्र.136. प्रार्थना हमे क्या सीखाती है?

उ. प्रार्थना हमे ये सीखाती है की हमे परमेश्वर पर उनकी मदद के लिए पूरा भरोसा रखना चाहिए।

इफिसियों 6:18; फिलिप्पियों 4: 6; इब्रानियों 4:16

प्र.137. मसीह अभी कहाँ है?

उ. मसीह अभी परमेश्वर पिता के दाहिनी ओर, स्वर्ग* में है।

मरकुस 16:19; प्रेरितों के काम 5:31; रोमियो 8:34

प्र.138. क्या मसीह फिर से इस दुनिया में आएंगें?

उ. हाँ, वो आखरी दिन में दुनिया के सभी लोगों को न्याय करने आएंगें। और उन्हें बचाएंगे जो उनकी राह देख रहे हैं।

मत्ती 25: 31-32; 2 थिस्सलुनीकियों 1: 7-9; 2 तीमुथियुस 4: 1; इब्रानियों 9:28

प्र.139. धर्मियों* को मृत्यु में क्या होता है?

उ. धर्मियों* का शरीर मिट्टी में चला जाता है। उनकी आत्मा* प्रभु* के पास रहने के लिए चली जाती है।

उत्पत्ति 3:19; सभोपदेशक 12: 7; 2 कुरिन्थियों 5: 8

प्र.140. दुष्ट लोगों को मृत्यु में क्या होता है?

उ. दुष्ट का शरीर मिट्टी में चला जाता है। उनकी आत्मा* सज़ा भुगतेगी। परमेश्वर उन्हें वो दिन के लिए रखते हैं जब वो न्याय करने के लिए आएंगे।

लूका 16: 23-24; यूहन्ना 5: 28-29; 2 पतरस 2: 9

प्र.141. क्या मृत फिर से जीवित उठेंगे?

उ. हाँ, सारे मृत जी उठेंगे जब मसीह फिर से आएंगे।

दानिय्येल 12: 2; यूहन्ना 5: 28-29; प्रेरितों के काम 24:14-15

प्र.142. मसीह जब न्याय के दिन आएंगे तो दुष्ट लोगों को क्या होगा?

उ. परमेश्वर उन्हें नरक में कभी न ख़तम होने वाली विनाश से सजा देंगे। वे हमेशा के लिए परमेश्वर की उपस्थिति से बाहर फेंकें जाएंगे ।

मत्ती 25: 41,46; मरकुस 9: 47,48; लूका 12: 5; लूका 16: 23-26; 2 थिस्सलुनीकियों 1: 9; प्रकाशितवाक्य 20: 12-15

प्र.143. धर्मी* लोगों के साथ क्या होगा?

उ. धर्मी* लोग परमेश्वर के साथ आनंदित रहेंगे। वे एक नये स्वर्ग* और नई पृथ्वी में हमेशा के लिए जीवित रहेंगे।

यशायाह 66:22-23; 2 पतरस 3:13; प्रकाशितवाक्य 21:2-4

प्र.144. नये स्वर्ग* और नई पृथ्वी कैसी होगी?

उ. नये स्वर्ग* और नई पृथ्वी में हम परमेश्वर के साथ रहेंगे। हम कभी पाप नहीं करेंगे। हम कभी मरेंगे नहीं। कोई श्राप नहीं होगा। कोई दुःख और दर्द नहीं होगा। हम कभी दोषी, डरे हुए या लज्जित नहीं होंगे। हम परमेश्वर से आई हुई आनंद को जानेंगे।

इब्रानियों 12: 22-23; यहूदा 24; प्रकाशितवाक्य 21: 1-5; प्रकाशितवाक्य 22: 1-4।

निम्नलिखित प्रश्नोत्तरी इसे तैयार करने में उपयोगी थे:

- द वेस्टमिनिस्टर शोर्टर कैटेकिस्म
- द हाइडलबर्ग कैटेकिस्म
- अ स्माल कैटेकिस्म बाय मार्टिन लूथर
- द जिनीवा कैटेकिस्म बाय जॉन कैल्विन
- कैटेकिस्म फॉर यंग पीपल, पब्लिश बाय हयेस टाउन चैपल इवैंजेलिकल चर्च, मिडिलसेक्स, इंग्लैंड
- कैटेकिस्म फॉर यंग चिल्ड्रेन, पब्लिश बाय रेफोर्मेड बैप्टिस्ट चर्च ऑफ़ ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन
- द कैटेकिस्म फॉर यंग चिल्ड्रेन विथ कार्टून्स, पब्लिश बाय विक लोक्क्मन, रमोना, कैलिफ़ोर्निया
- स्पर्जन्स कैटेकिस्म, पब्लिश बाय वर्ड ऑफ़ ट्रुथ पब्लिशिंग, कैण्टन, जॉर्जिया
- द शोर्टर कैटेकिस्म: अ बैप्टिस्ट वर्शन, पब्लिश बी सिम्पसन पब्लिशिंग कंपनी, बून्टन, न्यू जेर्सी
- अ कैटेकिस्म पब्लिश बाय बी बॉब जोंस यूनिवर्सिटी प्रेस, ग्रीनविल्ल, साउथ कैरोलिना
- क्राइस्ट माय ओनली कम्फर्ट: द हाइडलबर्ग फॉर बैप्टिस्ट, पब्लिशर अननोन

शब्द सूची

शब्द	स्पष्टीकरण
लेपालक	लेपालक कानूनी कार्य है जिससे एक व्यक्ति को एक परिवार में शामिल किया जाता है। उस व्यक्ति को अब अपने बच्चे के रूप में पाला जाता है। इससे पहले, हम परमेश्वर के लिए अजनबी थे और परमेश्वर के दुश्मन थे। लेकिन अब परमेश्वर ने हमें उनके अपने प्रिय बच्चे के रूप में बुलाया है।
व्यभिचार	व्यभिचार का मतलब है किसी के साथ यौन संबंध रखना जो आपके अपने पत्नी या पति नहीं हैं।
स्वर्गदूत	स्वर्गदूत परमेश्वर की ओर से उनका संदेश लाने वाले सेवक हैं। स्वर्गदूत परमेश्वर के बारे में अच्छी बातें कहते हैं। स्वर्गदूत वो करते हैं जो परमेश्वर चाहते हैं। स्वर्गदूत उन लोगों के लिए भला करते हैं जो परमेश्वर के परिवार में हैं। बुरे दूत शैतान* के लिए काम करते हैं।
बपतिस्मा/ बपतिस्मा देना	चर्च* के अगुआ एक व्यक्ति को एक पल के लिए पानी में डुबाते हैं। फिर व्यक्ति को पानी से बाहर लाया जाता है। इस तरह हम दिखाते हैं कि मसीह ने हमें साफ़ किया है। हम सभों को यह भी दिखाते हैं कि हम चर्च* का हिस्सा हैं। जब हम बपतिस्मा लेते हैं तब यह हमें यीशु, का स्मरण दिलाता है, जो मारे गए। लोगों ने उन्हें एक कब्र में रखा। लेकिन वह मृतकों में से जी उठे।
विश्वासी	विश्वासी एक व्यक्ति है जो मसीह को जनता है और उस पर भरोसा करता है।
आशीषें	आशीषें वो अच्छी बातें है जो परमेश्वर हमारे लिए करता है। हम जब परमेश्वर से आशीष मांगते हैं, तब हम यह मांगते हैं कि वो हमारी मदद करें और हमारा भला करें।
गर्भ-धारण	एक बच्चे के बनने का क्षण, जब एक महिला के शरीर में एक नया जीवन शुरू होता है।
संतुष्ट	संतुष्ट होने का मतलब है, हमारे पास जो है उसमे खुश रहना। यह समझना कि हमारे पास जो है पर्याप्त है।
चर्च (कलीसिया)	चर्च लोगों का एक समूह है जो यीशु मसीह के बारे में सब कुछ विश्वास और पालन करते हैं। वे एक साथ मिलते हैं। वे विश्वासियों* को बपतिस्मा* देते हैं। वे प्रभु-भोज में शामिल होते हैं। वे मसीह की शिक्षा का पालन करते हैं।
क्रूस	एक क्रूस लकड़ी के दो टुकड़ों का जोड़ है। यीशु के समय, लोग अपराधियों को मारने के लिए क्रूस पर चढ़ाते थे। यीशु क्रूस पर मरे।
श्राप	एक शक्तिशाली शब्द जो किसी पर नुकसान या सजा ला सकता है।

इब्लीस	शैतान* इब्लीस का दूसरा नाम है। शैतान* बुरे दूतों में सबसे दुष्ट है [स्वर्गदूत देखें]।
शिष्य	शिष्य एक व्यक्ति है जो दुसरे का अनुवर्तन करता और उससे सीखता है। एक व्यक्ति जो यीशु में विश्वास रखता है। एक व्यक्ति जो यीशु की शिक्षा का अनुसरण करता है।
सनातन	चीज़ें जो हमेशा से हैं या हमेशा के लिए रहेंगी, सनातन हैं। जिसका कोई शुरुआत या अंत नहीं होता।
विश्वास (श्रद्धा)	विश्वास का मतलब है किसी पर या किसी में श्रद्धा रखना। परमेश्वर में भरोसा या ईमान रखना। यह मानना कि परमेश्वर वास्तविक हैं, भले ही हम उसे देख नहीं सकते हैं।
क्षमा करना	क्षमा करने का मतलब प्यार दिखाना है; और किसी के खिलाफ बुरी बातें याद नहीं करना। जब परमेश्वर हमें माफ करते हैं, तो वे हमारे खिलाफ गलत बातें नहीं रखते।
महिमा	परमेश्वर की महिमा वह सब कुछ है जो परमेश्वर को सुंदर और महान बनाता है, एक महान राजा की तरह।
अनुग्रह	अनुग्रह परमेश्वर का उपहार है जो हमें नहीं मिलना चाहिए क्योंकि हमने बुरा किया है। अनुग्रह परमेश्वर देता है क्योंकि वह हमारे प्रति बहुत दयालु है। क्षमा* और मदद परमेश्वर की ओर से है।
दिल (हृदय)	दिल एक व्यक्ति का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। इंसान का एक हिस्सा जो सोच, महसूस और चीजों का फैसला कर सकता है।
स्वर्ग	स्वर्ग वह जगह है जहाँ परमेश्वर और मसीह हैं। परमेश्वर वहाँ रहते और राज्य करते हैं। स्वर्ग वह जगह है जहाँ, परमेश्वर और यीशु को सचमुच में जानने वाले लोग, मरने के बाद जाएँगे। वो जगह जहां लोग हमेशा खुश रहेंगे और कोई परेशानी नहीं होगी। नया आकाश और नई पृथ्वी, उन लोगों का भविष्य घर है, जो परमेश्वर को जानते हैं।
नरक	नरक एक जगह है जहाँ परमेश्वर ने स्वयं से दुष्ट लोगों को अलग किया है। नरक मृत्यु के बाद दुष्ट लोगों के लिए सजा की जगह है।
पवित्र	पवित्र होना मतलब परमेश्वर के लिए अलग होना। परमेश्वर की तरह होना। धार्मिक होना। जब हम पवित्र हैं तो हम निष्पाप हैं। हम परमेश्वर के सामने शुद्ध हैं।

पवित्र आत्मा — परमेश्वर की आत्मा [आत्मा देखें] जिसे यीशु ने लोगों की मदद के लिए भेजा। पवित्र आत्मा परमेश्वर के दूसरा नाम है। इसके अलावा परमेश्वर का आत्मा, मसीह की आत्मा और मदद करने वाली आत्मा कहा जाता है। पवित्र आत्मा एक व्यक्ति हैं, लेकिन हमारे तरह मानव नहीं हैं। वो परमेश्वर हैं, पिता के साथ बराबर और परमेश्वर-पुत्र के साथ [त्रिएक भी देखें]। वह दुनिया में लोगों के बीच परमेश्वर का काम करते हैं। पवित्र आत्मा को कोई देख नहीं सकता पर वह उनके साथ और उनमे रहते हैं जो यीशु को जानते हैं।

आदर — किसी को आदर करना मतलब उनके बारे में भला कहना। किसी व्यक्ति से भला व्यवहार करना क्योंकि आप उनका आदर और महत्व करते हैं।

आदरणीय — भला व्यवहार करना। आपने जीवन से परमेश्वर और मनुष्यों को आदर देना। एक ऐसा इंसान बनना जो भली और उचित बातें करता है।

मूर्ति — मूर्ति जो लकड़ी, पत्थर या धातु से बनते हैं, जिससे लोग प्रार्थना करते हैं। पर उन्हें परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए। मूर्ति किसी व्यक्ति या चीज़ की तस्वीर है जिससे लोग प्रेम करते हैं बजाए परमेश्वर के। मूर्ति एक झूठा ईश्वर है। ऐसी कोई भी चीज़ जिससे लोग परमेश्वर से अधिक प्रेम करते हैं।

इस्राएल — वह भूमि जहां यहूदी लोग रहते थे। इस्राएली यहूदियों का दूसरा नाम है। वे इब्राहीम, इसहाक, और याकूब के संतान हैं।

यहूदी — यहूदी वो लोग हैं जो इब्राहीम, इसहाक और याकूब, और उनके संतानों से जन्मे हैं। एक व्यक्ति जिसे यहूदियों का विश्वास* है।

राज्य — राज्य वह है जहां एक राजा शासन करते हैं। एक देश, जहां एक राजा शासन करते हैं। परमेश्वर का राज्य वो है जहां परमेश्वर राज्य करते हैं।

व्यवस्था — नियम, जो एक शासक बनाता है लोगों को बताने के लिए कि वो कैसे रहें। नियम जो परमेश्वर ने मूसा को दिए, इस्राएल के लोगों के लिए।

प्रभु — प्रभु बाइबल में परमेश्वर का नाम है। इसका मतलब है वह सब बातों के ऊपर हैं और सभी बातें के शासक हैं। एक नाम जो यीशु के लिए उपयोग करते हैं, जब हम उसकी आज्ञापालन करते हैं।

भविष्यवक्ता — एक भविष्यवक्ता जो अन्य लोगों को यह बताने के लिए सक्षम था कि परमेश्वर क्या चाहता है। भविष्यवक्ता परमेश्वर के लिए पूर्वकाल में बात करते थे। जो भविष्य में क्या होगा ये बताया करते थे।

सफल होना	सफल होना अच्छी बातों का आनंद उठाना। सफल होना अच्छे सेहत में या धनी होना। जब लोग को हमारे लिए अच्छी बातें बोलते हैं तब हम सफल होते हैं। हम सफल होते हैं जब हम अन्य लोगों की दया का आनंद उठाते हैं।
छुड़ाना	कुछ वापस खरीदना जो खो या ले लिया गया था। कुछ अपना बनाने के लिए एक कीमत अदा करना।
पश्चाताप करना	पश्चाताप करना पाप* से मन फिराना है। वह करना जो परमेश्वर हमारे द्वारा करना चाहते हैं। यह तय करना कि अतीत में किए गए बुरी बातें फिर से नहीं करें।
सम्मान	सम्मान का मतलब है बहुत मूल्यवान के रूप में व्यवहार करना।
पुनरुथान	पुनरुथान का मतलब है मृतकों में से जी उठाना। वापस जीवित होना।
धर्मी	धर्मी होने का मतलब है परमेश्वर के साथ सही होना। धर्मी वे है जो परमेश्वर के साथ सही है। जब परमेश्वर एक व्यक्ति को सही करता है, वो उस व्यक्ति को शुद्ध देखता है। एक धर्मी व्यक्ति परमेश्वर का दोस्त है और उनका दुश्मन नहीं।
सब्त (विश्राम दिन)	सब्त वो दिन है जब परमेश्वर ने अपने काम से विश्राम किया था। सब्त वो दिन है जब परमेश्वर ने यहूदी* लोगों को काम करने से मना किया था।
बचाव/उद्धार	जब परमेश्वर हमे पाप की शक्ति* और परिणाम से बचाता है तब उसे उद्धार बोलते हैं। बुरे कामों से बचाव या छुटकारा।
शैतान	शैतान* इब्लीस का दूसरा नाम है। शैतान* बुरे दूतों में सबसे दुष्ट है [स्वर्गदूत देखें]।
उद्धारकर्ता	यीशु मसीह उद्धारकर्ता है। एक व्यक्ति जो हमे परमेश्वर के पास लाता है और हमारे किये हुए बुरे कामों की सजा से छुड़ाता है।
पाप/पापी	पाप परमेश्वर के खिलाफ या दूसरों के खिलाफ की हुई बुरी बातें है। जब हम परमेश्वर की दी हुई आज्ञा का पालन नहीं करते, हम पाप करते हैं। जब हम वो नहीं करते जो परमेश्वर चहाते है, वो पाप है। सारे लोग पापी है क्योंकि वे कार्य परमेश्वर के खिलाफ या दुसरे लोगों के खिलाफ करते हैं। सारे लोग पापी है क्योंकि सब बुरे विचारों के साथ पैदा हुए हैं।
प्राण	प्राण व्यक्ति का वो भाग है जिसे हम देख नहीं सकते हमारे जीवन काल के दौरान हमारे अन्दर है। और मरने के बाद भी रहेगा। परमेश्वर आदम और हव्वा को प्राण दी थी जब उनमे जीवन का श्वास फूंका। एक व्यक्ति का प्राण कभी कभी एक व्यक्ति का आत्मा कहा जाता है [आत्मा देखे]।

आत्मा	आत्मा एक प्राणी है जिसके पास शारीर नहीं है और कोई देख नहीं सकता। परमेश्वर आत्मा है। परमेश्वर और भी आत्माओं (स्वर्गदूत*) बनाए जो हम देख नहीं सकते और व् भले और बुरे हो सकते हैं। एक व्यक्ति का प्राण कभी कभी एक व्यक्ति का आत्मा कहा जाता है [प्राण देखे]।
त्रिएक	त्रिएक वो शब्द है जब हम एक परमेश्वर को तीन व्यक्तित्व में बताते हैं: परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र (यीशु), और परमेश्वर पवित्र आत्मा*।
भरोसा	भरोसा रखने का मतलब हैं उसके या किसी के पीछे चलना जिन्हें हम सच्चा मानते हैं, विश्वास* रखना और विश्वास* के साथ कार्य करना [विश्वास देखे]।
कुंवारी/कुंवारा	जो व्यक्ति किसी के साथ यौन सम्बन्ध नहीं किया है उसे कुंवारी/कुंवारा कहते हैं।
आराधना	आराधना करने का मतलब है ये दर्शाना की परमेश्वर महान है और हम उनसे बहुत प्यार करते हैं। आराधना करना मतलब आदर देना [आदर देखें] और धन्यवाद देना। हम जब परमेश्वर के साथ हैं तब हमें यह करना चाहिए।